दलित साहित्य/जूठन आत्मकथा

आधुनिक समय में अपनी मुखरता, अपने अधिकारों के प्रति सजगता व संघर्षो के कारण दो विमर्श आस्तित्व में आयें इनमें से एक स्त्री विमर्श के रुप में व दूसरा दलित विमर्श के रुप में उभरा। दोनो ने अपने संघर्षो की गाथा अपने साहित्य में बयां की। दलित साहित्य दलितों शोषितों पर लिखा गया साहित्य है महान चिंतक साहित्यकार ओमप्रकाश बाल्मीकि के शब्दो में समझे तो दलित शब्द का अर्थ है–जिसका दलन और दमन हुआ है दबाया गया है, उत्पीड़ित शोपित सताया हुआ, गिराया हुआ उपेक्षित घृणित रौंदा हुआ मसला हुआ कुचला हुआ विनिष्ट, मर्दित, पस्तहिम्मत, हतोत्साहित वंचित आदि। अर्थात सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत सबसे निचले पायदान पर आने वाले वर्ग को वर्ण व्यवस्था में अछूत या शुद्र कहा गया है और जिसे संविधान में अनुसूचित जाति के नाम से पुकारा गया है उसे हम दलित नाम से भी जानते हैं।मुख्य रुप से अगर दलित साहित्य की बात करें तो हिन्दी में दलित साहित्य का नामकरण मराठी दलित साहित्य की प्रेरणा स्वरुप ही हुआ। आज दलितों का दलितों के लिए व दलित द्वारा लिखा गया साहित्य दलित साहित्य के नाम से जाना जाता है।

दलितों का साहित्य अर्थात् जिसमें दलित शोषित व्यक्ति या वर्ग की स्थिती का उनकी दशा–दुर्दशा का उनके तिरस्कार आदि का वर्णन हो। दलितों द्वारा लिखे गये साहित्य मे खास विशेषता यह हो जाती है कि इसमें भोगा हुआ यथार्थ वर्णित होता है। दलित साहित्य की परंपरा पुरानी है। अब तक इस साहित्य में कविता कहानी आत्मकथायें आदि लिखी जा चुकीं हैं। आत्मकथाओं की बात करें तो श्योराज सिंह बेचैन की मेरा बचपन मेरे कंधों पर व बाल्मीकि की जूठन उत्कृष्ट कृतियाँ मानी जाती हैं।

ओम प्रकाश वाल्मीकी को हम दलित साहित्यकार के रुप में जानते हैं उन्होने कविता कहानी नाटक आत्मकथा आदि विभिन्न विधाओं के माध्यम से साहित्य को समृद्ध किया है किन्तु प्रसिद्धि उनकी आत्मकथा जूठन के कारण ही है। मुख्यधारा से अलग दलित साहित्य की अपनी पहचान है जिसमें हजारों साल से नारकीय जीवन जी रहे शोषित वर्ग की दशा को दिखाया गया साथ ही सामाजिक व्यवस्था के भीतर छिपी अमानवीयता को उधाड़कर दलित संघर्ष व दलित जीवन की विसंगतियों का वर्णन किया गया।

'जूठन' को दलित आत्मकथा के रुप में जाना जाता है। जैसा कि आत्मकथा में होता हैं इसमे भी वाल्मीकि जी अपने भंगी समाज की दुर्दशा का वर्णन करते हैं। पाठ्यपुस्तक में संकलित अंश जूठन के पहले खण्ड से लिया गया है। इस अंश में जातिगत दंश की अभिव्यक्ति हैं । लेखक ने इण्टर उत्तीर्ण करते समय आने वाली कठिनाईयों तथा तत्कालीन साहित्यिक व राजनीतिक गतिविधियों की भी चर्चा की है। यह भी बताया है कि किस प्रकार वे अम्बेडकर से मिलकर उनसे प्रभावित हुए तथा उनकी लिखी पुस्तकें पढ़ डाली और इस दौरान उनका व्यक्तित्व ही बदल गया ।

जूठन में उन्होने आपबीती ही लिखी हैं लेकिन उनका लेखन ऐसा है जो उन्हें दार्शनिक चिन्तक व प्रवर्तक के रुप में खड़ा कर देता है। वे ऐसे शख्स थे जिन्होंने दलित साहित्य को एक ऊँचाई प्रदान की और उन्हें प्रेरणा मराठी दलित साहित्य व अम्बेडकर के साहित्य से मिली।

कुल मिलाकर इस आत्मकथा अंश 'जूठन' में उन्होने दलितों के संघर्ष उनकी पीड़ा उनकी दुर्दशा को दिखाया है इसमें कथा वाल्मीकि जी अर्थात् लेखक की अवश्यक है लेकिन समस्या इसमें भारतीय समाज की हैं कि किस प्रकार एक देश एक ही समाज में वर्ग तथा वर्ण के नाम पर भेदभाव है और दलितों को इसका दंश सहते हुए अमानवीय जीवन जीने के लिए विवश होना पड़ता है। इस आत्मकथा से वाल्मीकि

जी की तेजतर्रार भाषाशैली में घटनाओं का वर्णन है। भाषा में दुरूहता नहीं है साथ ही वर्ग विशेष में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों का भरपूर प्रयोग है जैसे टेम, देहरा। कई अंश लाक्षणिक समास शैली में हैं जो जातिगत दंश को और उभार देता है। कुल मिलाकर हिन्दी आत्मकथा में सर्वाधिक चर्चित व पढ़ी जाने वाली आत्मकथा के रुप में हम जूठन को जानते हैं और वाल्मीकि जी को उनके सशक्त लेखन के कारण जानते हैं। इस खण्ड को पढ़कर मुख्य धारा से अलग एक नये प्रकार के साहित्य व उसकी अपनी विशेषताओं पर ध्यान अपने आप चला जाता है।